प्यारे भाई रामसनाथ,

स्वयंप्रकाश

परीक्षा के दिन नज़दीक थे।

पूरे साल हमारे स्कूल में गणित पढ़ाने वाला कोई अध्यापक नहीं रहा था और हम सब डर रहे थे कि गणित के पेपर में हमारा क्या होगा! क्योंकि एक विषय में फेल हो जाने का मतलब था पूरा साल बरबाद हो जाना।

हम में से कुछ ने हमारे साइंस टीचर रस्तोगी सर के घर जाकर भी गणित पढ़ने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुए। बात यह थी कि रस्तोगी सर के घर एक छोटा बच्चा था जिसे शाम के समय उन्हें ही सम्हालना पड़ता था। और वो सर की गोद में आते ही चीख-चीखकर रोने लगता था। इससे रस्तोगी सर गणित पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते थे।

हमारे मोहल्ले में एक सुधाकर काका थे जो बी.एस.सी. में पढ़ते थे। एक दिन जक्कू ने हम सब की परेशानी उनके सामने रखी और वे कृपापूर्वक हमें गणित

पढ़ाने को राज़ी भी हो गए। लेकिन जब हम झुण्ड बनाकर उनसे गणित पढ़ने गए तो पूरे एक घण्टे वे हमें पढ़ाने की बजाय खुद हमसे ही गणित समझते रहे और बीच-बीच में कहते रहे, "पहले समझना तो पड़ेगा न!"

बड़ी परेशानी थी। राधेश्याम-बालकिशन जैसे कुछ लड़के नकल की पर्ची भी ले जाते थे। लेकिन गणित में क्या ले जाओगे? हद से हद फार्मूला! सही तरीके से लगाकर सवाल तो खुद ही करना पड़ेगा न! और कहाँ कौन-सा फार्मूला लगाना है यह कौन बताएगा? और आगे-पीछे वालों से उत्तर भी कैसे मिलाओगे? कैसे पता चलेगा कि किसका उत्तर ठीक है?

बेहद मायूसी का आलम था। समझ में नहीं आता था इस मरे "ए प्लस बी और साइन-कॉज़अल्फा-बीटा" का ज़िन्दगी से लेना-देना क्या है! पता नहीं किस अहमक ने गणित जैसे रूखे-सूखे विषय की रचना की है और बच्चों को परेशान करने के लिए इसे कोर्स में भी लगा दिया है! और एक बात तो सबको मालूम है - और कोई हो न हो, गणित के टीचर तो ज़रूर खड़ूस होते हैं। न हँसें, न गाएँ। पता नहीं इनके घरवाले इन्हें कैसे बरदाश्त करते होंगे! हो सकता है इतने साल में इनके बच्चे भी इन्हें पापा-पापा कहने की बजाय थीटा-थीटा कहने लगे हों!

लेकिन परीक्षा में तो बैठना ही पड़ेगा! इसका क्या करें?

एक दिन राधेश्याम गणित की परीक्षा में पास होने का एक नायाब नुस्खा लेकर आया। यह नुस्खा वह अपने पुराने मोहल्ले के एक तांत्रिक से लेकर आया था जो अभी-अभी जेल से छूटकर आया था। नुस्खा यह था कि तीन दिन पहले जली किसी चिता की चुटकी भर राख यदि अमुक मंत्र पढ़कर उत्तरपुस्तिका के नीचे रख दो तो अपने आप सही उत्तर उतरते चले जाएँगे, और अगर तुमने ऐसा कर लिया तो किसी के पूज्य पिताजी तुम्हें फेल नहीं कर सकते!

मरता क्या न करता! हम लोग चिता की राख लाने के लिए श्मशान जाने की योजना बनाने लगे। श्मशान हमारे स्कूल से ज़रा ही दूर खान नदी के किनारे पर था। तो अब सुबह से शाम तक श्मशान पर नज़र रखी जाने लगी। कब कौन-सा मुर्दा आया और कहाँ जला?

मुन्नू ने तो अपनी सामाजिक अध्ययन की कॉपी में एक पृष्ठ पर बाकायदा एक टेबल जैसे बना ली। दिनाँक, मुर्दा क्रमाँक, लाने का समय, जलने का स्थान वगैरह!

ज़ाहिर है सज़ायाफ्ता तांत्रिक के बताए नुस्खे पर अपार श्रद्धा होने के बावजूद सब बच्चे इस अभियान

के लिए तैयार नहीं हुए। लेकिन घटते-घटते भी निश्चित दिन नहीं – दिन में यह काम कैसे किया जा सकता है – निश्चित रात को ठीक ग्यारह बजे राधेश्याम की सीटी सुनकर सात बच्चे तो बाड़े के बाहर आ ही गए।

हम लोग पहले चुपचाप और दबे कदमों गली से बाहर निकले और फिर तेज़-तेज़ चलने – बल्कि दौड़ने लगे।

अँधेरी रात थी। हवा में ठण्डक थी। सड़क पर एकाध आवारा गाय को छोड़कर जीवन का कोई चिन्ह नहीं था। गँजी कम्पाउण्ड के पीछे निकलते ही श्मशान साफ दिखाई देने लगा। एक चिता धीमे-धीमे जल रही थी। आसपास उसका ज़रा-ज़रा उजाला था। चारों तरफ सन्नाटा था। हम सब झाड़ियों में दुबककर बैठ गए। इत्मीनान कर लेना ज़रूरी था कि श्मशान में इस समय कोई है तो नहीं!

आदमी नहीं होगा, लेकिन भूत तो हो सकता था! जिसके उल्टे पैर होते हैं! अचानक किसी पेड़ पर से कूदकर किसी की – मान लो मेरी ही – गरदन दबोच ले, झपट्टा मारकर आसमान में ले जाए और मेरी मुण्डी काटकर नीचे फेंक दे...तो??

...या फिर कोई चुड़ैल बाल फैलाए, अट्टहास करती अचानक कहीं से निकल आए और किसी की – हो सकता है मेरी ही – छाती पर चढ़कर बैठ जाए और अपने गन्दे पैने नाखूनों से छाती फाड़कर खून पीने लगे... तो??

...नहीं, नहीं...। भूत-प्रेत कुछ नहीं होता। सब अन्धविश्वास की बातें हैं। हमें सिर्फ चुटकी भर राख ही तो चाहिए।

...लेकिन चिता को हाथ लगाते ही अगर उस पर पड़ा अधजला मुर्दा अचानक उठकर बैठ जाए और उसका कंकाल कसकर तुम्हारा हाथ पकड़ ले... तो? क्या करोगे? कौन बचाने आएगा?

...नहीं, नहीं... अधजला मुर्दा कैसे उठकर बैठ सकता है और बेचारे गणित के मारे किसी निर्दोष बच्चे का हाथ पकड़ सकता है! उसके भी तो छोटे-छोटे बच्चे होंगे! उन्हें भी तो गणित पढ़ना पड़ता होगा!

...लेकिन यह ज़रूर हो सकता है कि जिस जगह तुम खड़े हो... वहाँ किसी बच्चे की लाश गड़ी हुई हो! तुम्हारे ज़मीन पर ज़रा-सा ज़ोर देते ही तुम्हारा एक पैर तीन फुट ज़मीन के भीतर धसक जाए, ज़मीन फोड़कर लाश का सिर और एक हाथ बाहर निकल आए और उसकी कँचे जैसी निर्जीव और भावहीन एक आँख तुम्हें घूरने लगे!!

ऐसे ही ख्याल हम लोगों के मन में घुड़दौड़ मचाए थे!

...पास ही कहीं सरसराहट हुई। या शायद अन्धेरे में कोई उड़ता हुआ कान को छूता हुआ निकल गया।

मुन्नू धीरे से बोला, "बालकिशन! यार यहीं से वापस चले चलें क्या?"

अबे चोप! बालकिशन ने झिड़क दिया।

कुछ देर बाद रास्ता साफ पाकर हम सब एक-दूसरे का हाथ पकड़े श्मशान के भीतर घुसे। हमारी टाँगें थर-थर काँप रही थीं। घोर सन्नाटा और अन्धेरा। कभी भी कोई अन्धेरे से कूदकर सामने आ सकता था।

बालकिशन ने जैसे ही राख उठाने के लिए हाथ बढ़ाया कहीं कोई कुत्ता बड़ी ज़ोर से भूऊऊ करके रोया। बालकिशन सकपका कर पीछे हटा। जक्कू तो चीख पड़ा और पीछे मुड़कर भागा। इसी समय चिता के पीछे से हाथ में गिलास लिए बिखरे बालवाली एक मोटी और काली कलूटी औरत उठ खड़ी हुई, जिसके दाँत बाहर निकले हुए थे आँखें लाल थीं और जिसने ब्लाउस तो पहन रखा था लेकिन कमर के नीचे कुछ नहीं पहन रखा था। उसे देखते ही हममें से कइयों की चीख निकल गई। सब भागे। मुन्नू धक्का खाकर गिर पड़ा। उसकी कमीज़ पर राधेश्याम ने पाँव रख दिया। मुन्नू उठा तो कमीज़ चर्र से फटी। उसे लगा नंगी औरत ने उसे पकड़ लिया। वह बिलबिलाकर रो पड़ा बालकिशन और राधेश्याम एक तरह से उसे उठाकर घर तक लाएँ।

इस साहसिक अभियान के बहादुर यह यात्रियों में से कम से कम तीन ने कई साल बाद बताया कि उस दिन उनकी निकर गीली हो चुकी थीं और वे इसी हाल में बिस्तर में घुस चुके थे और सोच रहे थे कि इससे तो एक साल फेल हो जाना शायद ज़्यादा ठीक रहता!

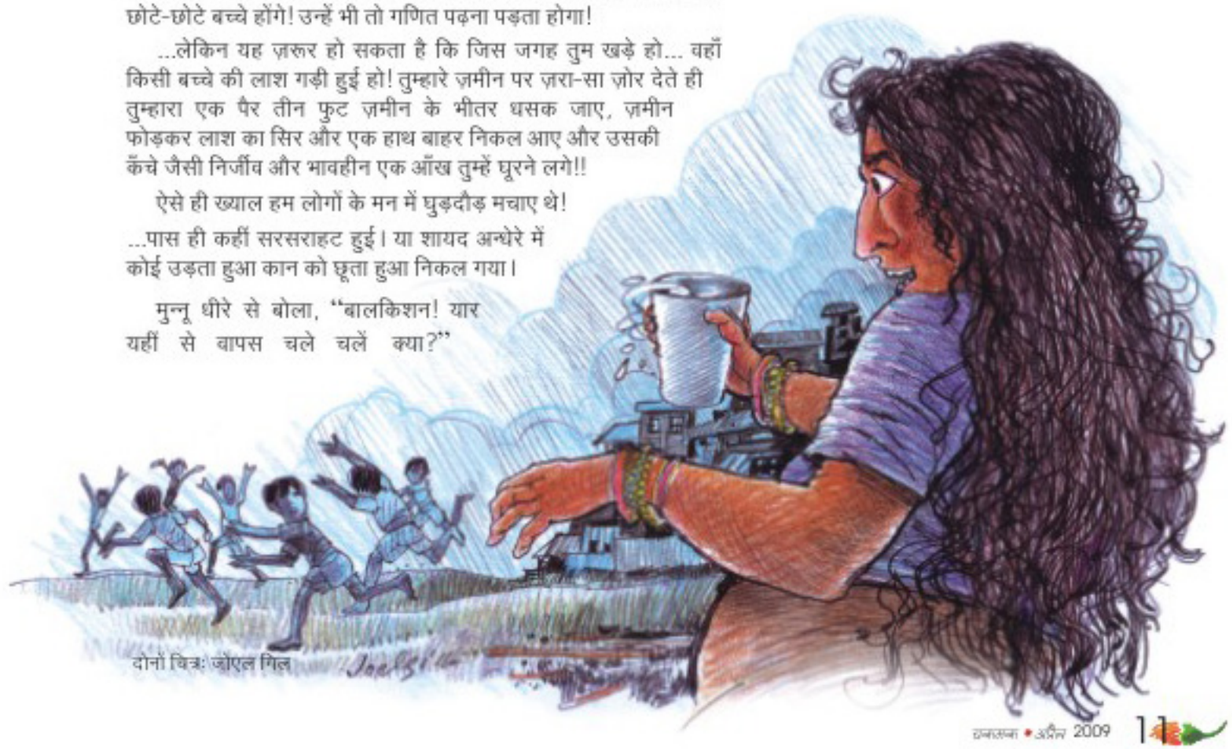

दोनों चित्र: जोएल गिल